निफाक की निशानियों का बयान |मिश्कात शरीफ

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे मिश्कात शरीफ हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

हज़रत सफवान बिन अस्साल रदी से रिवायत हे की एक यहूदी ने अपने साथी से कहा की आओ उस नबी (रसूलुल्लाहﷺ) के पास चले तो उसके साथी ने उससे कहा की उसे नबी ना कहो, अगर उसने तमसे ये अलफाज सुन लिये तो उसकी चार आँखें हो जायेंगी (यानी वह खुशी से फूले नहीं समायेंगे) चुनाँचे वे दोनों हुज़ूरﷺ की खिदमत मे हाज़िर हुए.

उन्होंने आपﷺ से कुछ स्पष्ट अहकामात के बारे मे सवाल किया तो आपﷺ ने फरमाया तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक ना करो, चोरी ना करो, ज़िना ना करो, जिस जान को अल्लाह तआला ने कत्ल

करना हराम करार दिया हे उसे नाहक कत्ल ना करो, किसी बेगुनाह को कत्ल कराने के लिये उस पर गलत इल्ज़ाम लगाकर हाकिम के पास ना ले जाओ, जादू ना करो, सूद ना खाओ, पाकदामन औरतों पर ज़िना की तोहमत ना लगाओ, मैदाने जंग से ना भागो और ऐ यहूदियो! तुम्हारे लिये खास हुक्म यह हे की हफ्ते शनिवार के दिन अल्लाह के हुक्म से आगे ना बढो.

यह सुनकर उन दोनों ने आपके हाथों और पाँव को चूमा और इकरार किया की आप सच्चे नबी हे. रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया फिर तुम्हे मेरी पैरवी से कौनसी चीज़ रोक रही हे? उन्होंने कहा की हज़रत दाऊद अलै ने अपने रब से दुआ की थी की नुबुव्वत का सिलसिला हमेशा उन्हीं की औलाद मे चलता रहे लिहाज़ा हमे खतरा हे की अगर हमने आपकी

इताअत की तो यहूदी हमे कत्ल कर देंगे. (तिर्मिज़ी, नसाई की रिवायत का खुलासा)

वज़ाहत:- यहूदियों की मज़हबी किताबों मे आपकी नुबुव्वत का तज़किरा मौजूद था, उन्हे आप ﷺ के नबी होने का इस तरह यकीन था जिस तरह किसी को उसकी औलाद अपनी होने का यकीन होता हे मगर हसद, जलन, बुगज़ और दिल के कीने की वजह से वे आप ﷺ पर ईमान ना लाये. हज़रत दाऊद अलै की दुआ यहूदियों की अपनी गढीहुई बात थी उन्होंने ऐसी दुआ नहीं की थी इसलिये की उन्होंने खुद तौरात और ज़बूर मे आप ﷺ का खातिमुन्नबिय्यीन होना पढ रखा था. 'अधिक मालूमात के लिये पढिये तर्जुमा व तफसीर सूर बकरह /109 और 146'.